www.krishipravahika.vitalbiotech.org

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 10, 13-18

Article ID: 223

ग्रामीण विकास में युवाओं की भूमिका

अंकुर जैन[1], डॉ. अतुल कुमार यादव

[1]शोधार्थी

[2]एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, ए.के.(पीजी) कॉलेज शिकोहाबाद (उ.प्र.)

युवाओं की अवधारणा को शोधकर्ता ने व्यक्तिगत जीवन की अवधि के रूप में परिभाषित किया है जो बाल्यावस्था के अंत और वयस्कता के आरंभ के साथ शुरू होती है। इस अवस्था में एक व्यक्ति मताधिकार व परिपक्वता की आयु तक तो पहुँच जाता है परंतु वह अभी तक वह वयस्क जीवन के पूर्ण अधिकारों और कर्तव्यों को प्राप्त करने के लिए, जैसे कि शादी और अपने व अपने परिवार के लिए आजीविका की कमाई जैसे कार्यों के लिए पूर्ण रूप में तैयार नहीं होता। यूएनडीपी के अनुसार वैश्विक आबादी में कुल 121 करोड़ युवा हैं; जिनमें से 21 फीसदी युवा भारतीय हैं।

भारत में 62% से अधिक जनसंख्या की आयु 15 से 59 वर्ष के मध्य है तथा संपूर्ण जनसंख्या की औसत आयु 30 वर्ष से कम है। इसका तात्पर्य यह है कि भारत जनसंख्या की आयु संरचना के आधार पर आर्थिक विकास की क्षमता का प्रतिनिधित्व करने वाले 'जनसांख्यिकीय लाभांश' के चरण से गुज़र रहा है। युवा ग्रामीण विकास - विशेष रूप से कृषि विकास के मामले में मुख्य भूमिका निभाते हैं। युवाओं की मानसिकता मुख्यतः उत्पादक के रूप में विकसित होती है; खासकर जब उन्होंने इसे ग्रामीण विकास के उद्देश्य के लिए ही विकसित किया हो। इसका मुख्य कारण यह है कि युवाओं में विभिन्न प्रकार की विशेषताएं हैं जो कृषि और ग्रामीण विकास के लिए अमूल्य होती हैं। युवा संघों को कई गतिविधियों जैसे फसल रोपण, सामुदायिक खेती, ग्राम चौकों का निर्माण, विज्ञान और तकनीकी विधियों के संवर्धन और अनुप्रयोग में योगदान, ऊर्जा संरक्षण, निर्माण कार्य, जैव प्रौद्योगिकी और ग्रामीण जनता के लिए रोजगार सृजन आदि, में शामिल किया गया है। (ओमेह एवं ओडोम, 2011)।

ग्रामीण व्यक्तियों का जीवन स्तर उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, मनोरंजन, भोजन और पोषण स्तर एवं सुरक्षा जैसे कारकों पर निर्भर करता है। संपूर्ण भारतवर्ष में कृषि का अत्यधिक महत्व है और इसे ग्रामीण व्यक्तियों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है। वर्तमान समय में युवा शक्ति ग्रामीण विकास के लिए कयी नई-नई कृषि तकनीक और प्रौद्योगिकियों को खोजने और उनके विकास में अपना योगदान दे रहे हैं।

उद्देश्य - प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य ग्रामीण विकास में युवाओं की भूमिका को जानना है।

शोधविधि - प्रस्तुत शोधपत्र में वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। एवं शोध से संबंधित विभिन्न आँकड़ो को विभिन्न शोध पत्र - पत्रिकाओं, रिपोर्टों, किताबों, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध ग्रंथों आदि के माध्यम से एकत्रित किया गया है।

युवा लोगों की पहचान - युवा व्यक्ति समस्या का समाधान खोजने और करने में अधिक रचनात्मक होते हैं; वे अपने समुदाय के लोगों को उनकी निर्वाह आवश्यकताओं को पूरा करने, सुरक्षा में सुधार करने एवं अपने स्वयं के जीवन पर नियंत्रण प्राप्त करने व मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। दुनिया की आबादी का लगभग 50% युवा और बच्चे हैं। वैश्विक आबादी में 1.2 अरब जनसंख्या 15 से 24 साल के व्यक्तियों की हैं - जिनमें लगभग 90% विकासशील देशों से आते हैं। युवा जनसंख्या दुनिया की आबादी का एक महत्वपूर्ण भाग हैं; वे चुनौतियों के साथ-साथ विकास के अवसरों का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। युवा देश के आर्थिक विकास के साथ-साथ अपने समुदायों और समाज

के विकास को एक निश्चित दिशा प्रदान करते हैं। युवाओं की भागीदारी के राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सामुदायिक विकास में निम्नलिखित लाभ हैं: (युवा भागीदारी, 2010)।

1. सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से अस्थिर वातावरण के दोषों को कम करता व उन्हें सुरक्षित रखता है।
2. विभिन्न मानव अधिकारों एवं सतत सहयोग को बढ़ावा देता है।
3. नियोजित समुदायों में प्रवेश करने और विश्वास व सामाजिक पूंजी को बनाने में सहायता करता है।
4. जनता की क्षमताओं को मजबूत कर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना।

युवा भागीदारी - 'भागीदारी' शब्द के कई अर्थ हैं जैसे योगदान, सहयोग, साझेदारी, साझाकरण, हिस्सेदारी आदि। भागीदारी के संदर्भ में चार मुख्य क्षेत्र हैं - सूचना-साझाकरण; इसमें सामूहिक और व्यक्तिगत कार्रवाई को सुविधाजनक बनाने के लिए व्यक्तियों को सूचित किया जाता है। परामर्श; इसमें व्यक्तियों से परामर्श किया जाता है, वे विचार और सुझाव प्रदान करते हैं, व एक संगठन के साथ बातचीत करते हैं और उनकी प्रतिक्रियाओं को समझते हैं। निर्णय लेना; इसमें युवा भाग लेते हैं और निर्णय लेने में शामिल होते हैं, जो व्यक्तिगत या दूसरों के साथ संयुक्त हो सकते हैं। निर्णय लेना किसी नीति या परियोजना के विशिष्ट मुद्दों पर हो सकता है। पहल करते हुए युवा किसी भी प्रकार की उपलब्धि के प्रारंभ में शामिल होते हैं (युवा भागीदारी, 2010)

यदि युवाओं के सहयोग को प्राप्त करना है तो उन्हें स्थानीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर निर्णय लेने और उनकी सामुदायिक जीवन में लोगों के मध्य सक्रिय और स्वैच्छिक भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए। जिम्मेदारी के इस बढ़ते क्रम में ग्रामीण विकास में युवाओं की भागीदारी एक नेता, सहयोगी व लाभार्थी के रूप में हो सकती हैं (युवा भागीदारी, 2010)।

युवाओं की सर्वेक्षणों में भागीदारी उनके अपने विचार एकत्रित करने या सीमित संख्या में प्रतिनिधियों को सुनने से कहीं अधिक है। इनसे औपचारिक परामर्श एवं संवाद इस हद तक उपयोगी है कि ये -

क) निर्णयों को निर्देशित करते हैं; और

ख) प्रामाणिक रूप से निर्णय और समझ के एक निकाय का प्रतिनिधित्व भी करते हैं।

हालांकि, यह एक ऐसी प्रक्रिया का हिस्सा होना चाहिए, जिसमें युवा नागरिकता जैसे अपने अधिकारों से अधिक जिम्मेदारियों की ओर बढ़ें; आगे बढ़ने के उद्देश्य से लेकर विकास हस्तक्षेपों की योजना और कार्यान्वयन में सक्रिय रूप से भाग लें। अतः युवाओ की भागीदारी के लिए विभिन्न संगठनो एवं व्यक्तियों का साथ उन्हें आगे बढ़ने की दिशा प्रदान करता है, परिणामस्वरूप वे आगे चलकर अग्रेता जैसे नेता आदि की भूमिका निभा रहे हैं। यह युवा नेतृत्व वाले विकास के मूल में सशक्तिकरण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो हमेशा स्थानीय संदर्भों और सांस्कृतिक मूल्यों और प्रथाओं के महत्व को स्वीकार करता है (युवा भागीदारी, 2010)।

युवाओं की भागीदारी में बाधाएं - युवाओं की भागीदारी में बाधाओं को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है (युवा भागीदारी, 2010)।

1. **गुणवत्ताविहीन शिक्षा और प्रशिक्षण** - अक्सर युवाओं को निर्णय लेने में भाग लेने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार करने में भारतीय शिक्षा प्रणाली विफल रहती है। वे भागीदारी को सीखने के लिए महत्वपूर्ण विचार व समस्या-समाधान के लिए आवश्यक विश्लेषणात्मक कौशल विकसित नहीं करते हैं। कुछ मामलों में, युवा लोगों को यह सुनिश्चित किए बिना निर्णय लेने में भाग लेने का अवसर दिया जाता है कि उन्हें पर्याप्त प्रशिक्षण या उपयुक्त जानकारी तक पहुंच प्राप्त हो जो उन्हें प्रभावी निर्णय लेने में सक्षम बनाए।

2. **कमजोर बुनियादी ढांचा** - कई देशों में, युवा लोगों की सरकार, मीडिया, निजी और नागरिक समाज क्षेत्रों के भीतर संस्थागत प्रणालियों और संरचनाओं तक सीधी पहुंच नहीं होती है। यह उनके अधिकारों की वकालत करने की उनकी क्षमता को गंभीर रूप से बाधित करता है। कुछ मामलों में जहां युवा निर्णय लेने में सक्षम हैं, वहां भी जटिल बुनियादी ढांचे के कार्यान्वयन ने उन्हें सीमित कर दिया है। इस तरह के सरकारी तंत्र युवाओं के आत्मविश्वास एवं भरोसे को तोड़ता है।
3. **असमानता और बहिष्करण** - असमानता को दूर करना और युवाओं के विशेष समूहों का सामाजिक बहिष्कार युवा क्षेत्र में एक बड़ी चुनौती है, यहां तक कि युवा संगठनों के लिए भी। विशेष रूप से ग्रामीण निरक्षर युवाओं तक पहुंचने के लिए रेडियो के उपयोग जैसे रचनात्मक तंत्रों की हमेशा कोशिश की जानी चाहिए और उनकी समीक्षा की जानी चाहिए।
4. **लागत** - अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि निर्णयन के समस्त स्तरों पर निर्णय लेने में वयस्कों को शामिल करने की तुलना में युवा लोगों को शामिल करना अधिक महंगा होता है। कुछ सकारात्मक वित्तीय परिणामों के कारण युवा लोगों को कुछ करने की अनुमति होती है जो उनके स्वयं के जीवन और दूसरों पर प्रभाव डालती है, जो अधिक उत्सुकता के साथ स्वीकार्य व व्यावहारिक हो सकते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं की भूमिका की मांग -

ऐसे कई क्षेत्र हैं जहां युवाओं की भूमिका की वांछनीय हैं, इन्हें कुछ इस प्रकार से देखा जा सकता है -

1. **कृषि** - ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि मुख्य व्यवसाय के रूप में जाना जाता है और इस व्यवसाय की आवश्यकता होती है व्यापक अनुसंधान, उत्पादन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग, फसल, सिंचाई और कई अन्य कार्य। जो युवा अच्छी तरह से शिक्षित होते हैं एवं कृषि क्षेत्र की गतिविधियों का पर्याप्त ज्ञान रखते हैं, कृषि के विकास में सहायक होते हैं। सामान्यतः कृषि क्षेत्र में प्रौद्योगिकियों का उपयोग करना, व्यापक अनुसंधान को लागू करना आदि युवाओं के द्वारा ही संभव हो पाता है (बेनेल, 2007)।
2. **लघु उद्योग** - ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के अलावा लघु उद्योगों की भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है जिसमें सर्वाधिक रोजगार उपलब्ध कराते हैं, अशिक्षित श्रमिकों के कौशल विकास में युवाओं की भूमिका अहम रही है। ताकि वे उद्योगों में नौकरी प्राप्त कर अपना जीविकोपार्जन कर सकें। इन उद्योगों में रोजगार के लिए कौशल और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है, इसलिए ग्रामीण जनता विशेष रूप से महिलाओं के लिए कौशल विकास अत्यधिक आवश्यक है जिससे कि वे रोजगार प्राप्त कर सकें।
3. **कौशल विकास** - सामान्यतः यह माना जाता है कि किसी क्षेत्र की प्रगति और विकास के लिए लोगों के कौशल और विशेषज्ञता का विकास आवश्यक है। भले ही कोई व्यक्ति लिख या पढ़ सकता हो, परंतु उसकी प्रगति के लिए कौशल विकास अनिवार्य है। कौशल विकास विभिन्न क्षेत्रों में होता है जैसे मशीनों का संचालन, वस्तुओं का निर्माण, खेल, संगीत, प्रौद्योगिकी का उपयोग, कंप्यूटर आदि। ग्रामीण जनता के बीच कौशल और प्रतिभा देश को विकास की ओर ले जाती है।
4. **शिक्षा** - ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए वहां शैक्षणिक संस्थानों का होना अत्यंत आवश्यक है; शिक्षा एक व्यक्ति को अपने लिए जीविका तलाशने में सक्षम बनाती है, एक शिक्षित व्यक्ति स्वयं को सक्षम बना सकता है। शिक्षा संस्थाओं की स्थापना कर तथा निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराकर ग्रामीण जनता में शिक्षा को प्रोत्साहन दिया गया है। प्रत्येक व्यक्ति को इन शिक्षा संस्थानों में प्रवेश दिया जाना चाहिए, फिर भले ही चाहे

उसकी उम्र और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो, ताकि वे साक्षरता हासिल कर सकें और एक सार्थक जीवन जी सकें।

5. **रोजगार के अवसर** - ग्रामीण क्षेत्रों का प्रत्येक व्यक्ति रोजगार, नौकरी और किसी प्रकार का काम करना चाहता है ताकि वह अपनी जीविका को चला सके। युवा व्यक्ति ग्रामीण जनता के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न करने में योगदान दे रहे हैं; फिर चाहे वे कृषि के क्षेत्र में हों या लघु उद्योग जैसे छोटी चाय की दुकानें, ढाबे, पान की दुकान इत्यादि।

ग्रामीण क्षेत्रों में युवा श्रम बाजार - पिछले पचास वर्षों में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर पूरी तरह से घटते कृषि क्षेत्र एवं बढ़ते औद्योगिक क्षेत्रों के तुलनात्मक आकार से जुड़ी है। इस संबंध को अर्थव्यवस्थाओं के औद्योगीकरण के एक संचारणीय प्रक्रिया के संकेत के रूप में समझा गया है। हालांकि, जीडीपी वृद्धि, श्रम बल की भागीदारी और बेरोजगारी के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि कम श्रम बल की भागीदारी और विशेषकर महिलाओं और युवाओं में बेरोजगारी में वृद्धि, औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों के विकास के साथ विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए संरचनात्मक रूप से प्रत्यारोपित तथ्य हैं(एल्डर, हास, प्रिंसिपी और शेवेल, 2015)।

युवाओं के बीच श्रम बल के योगदान में गिरावट को स्कूली शिक्षा में अधिक से अधिक वर्षों और विकास के उच्च स्तर वाले देशों में श्रम बाजारों की अधिक संरचनात्मक जटिलता द्वारा समझाया जा सकता है। ब्याज के उच्च स्तर श्रम आपूर्ति और श्रम मांग के बीच समकक्ष प्राप्त करना अधिक कठिन हैं, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर अस्थायी रोजगार के स्तर में वृद्धि होती है और स्नातक स्तर की पढ़ाई और स्थिर रोजगार खोजने के बीच बेरोजगारी की अवधि बढ़ जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में लगातार उच्च बेरोजगारी दर और युवाओं के लंबे श्रम बाजार विकास में सीमित रोजगार के अवसरों के लिए प्रतिस्पर्धा का पता चलता है। (एल्डर, हास, प्रिंसिपी और शेवेल, 2015)। बिना शर्त गरीबी के घटते स्तर और शिक्षा के बढ़ते स्तरों के साथ, उत्तरोत्तर अधिक खंडित श्रम बाजारों के निचले सिरे पर कुछ अप्राप्य नौकरियों को स्वीकार करने के लिए लोगों के कम प्रेरित होने की संभावना होती है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि मध्यम-आय वाले देशों में अधिकांश लोग काम नहीं करने का प्रबंधन कर सकते हैं, विशेष रूप से, मध्यम-आय वाली पृष्ठभूमि के स्नातक ऐसे काम करने की तुलना में काम नहीं करना पसंद करते हैं जिन्हें वे असम्मानजनक, अनिश्चित या सांस्कृतिक रूप से आपत्तिजनक पाते हैं। युवा स्नातकों में, विशेष रूप से युवा महिलाओं में यह बेरोजगारी की उच्च दर और असंतोष के कारण बहुत दृढ़ता से सामने आया है (एल्डर, हास, प्रिंसिपी और शेवेल, 2015)।

फिर भी, यह ध्यान देने योग्य है कि अभी भी ऐसे देश हैं जो मध्यम आय स्तर तक भी नहीं पहुंच सके हैं और निम्न आय वाले देश एक द्वैतवादी आर्थिक संरचना को बनाए रखते हैं जो एक छोटे औपचारिक खंड को एक बड़े गैर-औपचारिक खंड के साथ जोड़ता है। नतीजतन, रोजगार की समस्या स्पष्ट रूप से उच्च बेरोजगारी में नहीं है, बल्कि औपचारिक खंड के बाहर स्व-रोजगार और आकस्मिक मजदूरी रोजगार में छिपी हुई बेरोजगारी की उच्च घटनाओं में है। गरीब विशेष रूप से वे हैं जो औपचारिक खंड से बाहर रहते हैं और विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार और आकस्मिक मजदूरों के रूप में काम करते हैं। (एल्डर, हास, प्रिंसिपी और शेवेल, 2015)

ग्रामीण विकास में युवाओं की भूमिका का आकलन - ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में युवा सक्रिय रूप में भाग ले रहे हैं, गरीबी से पीड़ित लोग और ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक रूप से निराश लोग अपने कल्याण के लिए दूसरों पर निर्भर हैं। ऐसी कुछ गतिविधियों का वर्गीकरण निम्न बिन्दुओं के माध्यम से किया गया है जिन्हें

गरीबों के विकास के लिए लागू किया जाना चाहिए। एवं जिनमें युवाओं की भागीदारी अधिकतम हो सकती है (एच. रामकृष्ण, 2013)।

1. **कृषि कार्यक्रम** - कृषि क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ हो रही है जैसे पौधरोपण, पशु व मुर्गी पालन, लघु सिंचाई, पशुओं के लिए मुफ्त चिकित्सा देखभाल, पशुओं के लिए सुरक्षित पेयजल, बीज, उर्वरक, कीटनाशक और फसल वितरण जैसे कार्य है ; जिनमें युवा मुख्य भूमिका में हैं।
2. **प्रत्येक जीव के लिए स्वास्थ्य कार्यक्रम** - आवास, आश्रय स्थल, प्रदूषण मुक्त वातावरण, पशुओं के लिए स्वच्छ पेयजल, चिकित्सा सुविधाएं, नियमित स्वास्थ्य जांच और शिविर प्रत्येक जीव की स्वास्थ्य स्थितियों में सुधार करने में सहायता करेंगे।
3. **सामुदायिक विकास कार्यक्रम** - सामुदायिक विकास कार्यक्रम जैसे प्रगति के लिए गांवों को गोद लेना, बाढ़ और अकाल अवधि के दौरान नैतिक समर्थन, भोजन और पीने के पानी का योगदान करना, ग्रामीण युवाओं के लिए कल्याण और प्रशिक्षण कार्यक्रम, आवास परियोजनाएं, मरम्मत और मकानों का नवीनीकरण आदि मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति सामुदायिक विकास कार्यकम के माध्यम से पूरी की जा सकती है। ग्रामीण गरीबों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम जैसे मुख्य कार्यक्रम, इसमें ग्रामीण युवाओं को शामिल किया जाए। इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को ग्रामीण महिलाओं के लिए भी बढ़ाया जाना चाहिए ताकि संपूर्ण समुदाय के मध्य आत्मनिर्भरता को महसूस किया जा सके।
4. **मानव संसाधन विकास कार्यक्रम** - व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम, कौशल विकास कार्यक्रम, शैक्षिक कार्यक्रम, एकीकृत विकास परियोजनाओं में युवाओं की भागीदारी की आवश्यकता होती है और ये ग्रामीण लोगों को गरीबी और अवसाद की स्थिति से उबरने और बेहतर आजीविका कमाने में सक्षम बनाते हैं।
5. **व्यापार और औद्योगिक प्रोत्साहन** - ग्रामीण जनता हस्तशिल्प, लकड़ी के कार्य, बीड़ी बनाना, अगरबत्ती निर्माण, प्रिंटिंग प्रेस आदि जैसे उत्पादों के निर्माण और उत्पादन में कुशल होती है। वे हमेशा अपने व्यापार और उद्योगों को बढ़ावा देने के तरीकों की तलाश में रहते हैं, इसलिए युवा आबादी उनके सामान के प्रचार में सहायता करने में एक उत्तम विकल्प है।
6. **सरकारी सहायता** - ग्रामीण विकास के सभी स्तरों पर केंद्र, राज्य और स्थानीय सरकारों का समर्थन अनिवार्य है। ग्रामीण जनता को जागरूक करने के लिए सूक्ष्म वित्तपोषण एवं मौद्रिक लेनदेन का कार्यान्वयन आवश्यक है ताकि वे अपने वित्त का प्रभावी ढंग से प्रबंधन कर सकें। उन्हें जागरूक करने, उनका मार्गदर्शन करने और किसी भी समस्या या कठिनाई के मामले में उनकी सहायता करने में युवाओं की भूमिका अवश्यम्भावी है।

निष्कर्ष - युवा ऐसे वयस्क हैं जिनके पास कौशल ज्ञान और क्षमताएं हैं एवं उनमें काम करने व कुछ अच्छा हासिल करने का उत्साह व जज़्बा है। ग्रामीण विकास में शामिल युवाओं ने इस क्षेत्र को अपने क्षेत्र के रूप में अपनाया है एवं ग्रामीण विकास के अन्य सभी क्षेत्रों जैसे निर्माण, शिक्षा, रोजगार सृजन, उद्योग, कृषि, कौशल विकास, बिजली, ऊर्जा में भी युवाओं ने प्रभावी रूप से अपनी भागीरारी को दर्शाया है। सामान्यतः युवा ग्रामीण विकास की विभिन्न गतिविधियों में शामिल होते हैं, परंतु उनके इस सहयोग के रास्ते में कुछ बाधाएं आती हैं; जैसे अपर्याप्त ज्ञान और जानकारी, कमजोर बुनियादी ढांचा, लागत और असमानता एवं बहिष्करण। उच्च और निम्न कारकों के बिंदु भेदभावपूर्ण साबित हो सकते हैं और ये युवाओं के कार्य में बाधा व अवरोध को पैदा करते हैं। युवाओं की भागीदारी का मुख्य उद्देश्य युवाओं को परिसंपत्ति के रूप विकसित करने एवं नियंत्रित करने

में मदद करना है। ग्रामीण क्षेत्र को युवाओं के नेतृत्व में नई - नई तकनीकों व खोजों के माध्यम से विकास की दिशा प्रदान की जा रही है, जिसमें स्वयं उनके द्वारा नेतृत्व करने की उनकी योग्यता को मजबूत किया जा रहा है। युवाओं के समक्ष विभिन्न चुनौतियाँ और नकारात्मक रूढ़ियाँ यह प्रदर्शित करती हैं कि युवा कैसे कुछ परिचालन क्षेत्रों यथा संगठनात्मक विकास, नीति एवं योजना निर्माण, कार्यान्वयन और निगरानी व मूल्यांकन के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में विकासात्मक गतिविधियों में योगदान दे सकते हैं।

इस विषय का मुख्य उद्देश्य युवाओं की ग्रामीण विकास में भागीदारी के बढ़ते महत्व और बेहतर क्षमता की समझ को विकसित करना एवं प्रमुख मुद्दों व दृष्टिकोणों की खोज करना है। यह कई शोध क्षेत्रों की अभिव्यक्ति और शैली से परे है जो केवल युवाओं की भागीदारी पर ध्यान केंद्रित करने के लिए तर्क देते हैं। जबकि, यह शोधपत्र, नीति और योजनाओं के अनुसार व्यावहारिक परिचालन स्तर पर युवाओं के साथ वास्तव में कैसे काम करना है, यह बताता है। यह प्रयास विभिन्न संगठनों द्वारा अपने कार्य शुरू करने में मदद करेंगे। जब युवा व्यावहारिक और परिचालन स्तर पर शामिल होंगे, तो देश के भीतर ग्रामीण विकास निश्चित रूप से प्रभावी रूप से सकारात्मक दिशा में होगा एवं राष्ट्र के हित में साबित होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

- उमेह, जी.एन एंड सी.एन ओडोम (2011), रोल एंड कांस्ट्रैनट्स एंड रूरल डेवलपमेंट: एविडेंस फ्रॉम अगुआता एल जी ए ऑफ अनंबरा स्टेट, नाइजीरिया, *वर्ल्ड जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज,* 7(5), 515-519.
- एच.रामकृष्ण (2013), द इमर्जिंग रोल ऑफ एनजीओ एस इन रूरल डेवलपमेंट ऑफ इंडिया, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च,* 2(4), 43- 51
- एल्डर, एस., दे हास, एच., प्रिंसिपी, एम., एंड श्वेल, के (2015), यूथ एंड रूरल डेवलपमेंट: एविडेंस फ्रॉम 25 स्कूल - टू - वर्क ट्रांजिशन सरवेज, वर्क फॉर यूथ, *आई एल ओ.*
- बेनेल, पी. (2007), प्रमोटिंग लाइवलीहुड ऑपर्च्युनिटी फॉर रूरल यूथ, नॉलेज एंड स्किल्स फॉर डेवलपमेंट, *आई.एफ.ए.डी.*
- यूथ पार्टिसिपेशन इन डेवलपमेंट: ए गाइड फॉर डेवलपमेंट एजेंसी एंड पॉलिसी मेकर्स. (2010).